

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2694 • उदयपुर, बुधवार 11 मई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

धामणगांव जिला अमरावती (महाराष्ट्र) में दिव्यांग सेवा



नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता-मुक्ति का यज्ञ वर्षों से प्रारंभ किया है। इस प्रयास-सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई-बहनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 18 व 19 अप्रैल 2022 को टी.एम.सी. हॉल, दत्तापुर स्टेण्ड के पास, धामणगांव जिला अमरावती में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता आदर्श फाउंडेशन धामणगांव रेलवे महाराष्ट्र राज्य दिव्यांग बेरोजगार संघटना तथा हात फाउंडेशन धामणगांव रेलवे रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 211, कृत्रिम अंग माप 86, कैलिपर माप 29 की सेवा हुई तथा 06 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् चेतन जी परडखे (स्वाभिमानी क्षेत्रीय संघटना

अध्यक्ष), अध्यक्षता श्रीमान् विजय जी अग्रवाल (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् प्रशान्त जी झाड़े (अध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य दिव्यांग संघटना), श्रीमान् दिनेश जी वाघमारे (अध्यक्ष, आदर्श फाउंडेशन), श्रीमान् सुजित जी भजभुजे (अध्यक्ष, हात फाउंडेशन), श्रीमान् राजेश जी (समाजसेवी) रहे।

डॉ. सुश्री माहेश्वरी जी (अस्थि रोग विशेषज्ञ (फिजियो)), श्री नेहांस जी मेहता (पी.एन.डो.), श्री किशन जी सुथार (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री गोपाल जी सेन (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।



पुसद, जिला यवतमाल (महाराष्ट्र) में दिव्यांग सेवा



नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान-स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 24 अप्रैल 2022 को गजानन मंगलम शंकर नगर पुसद, जिला यवतमाल (महाराष्ट्र) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता दिव्यांग सेवा समिति पुसद (महाराष्ट्र) रही। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 162, कृत्रिम अंग माप 31, कैलिपर माप 10 की सेवा हुई तथा 37 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् अनिल जी आडे (उपविभागीय पुलिस अधिकारी, पुसद) अध्यक्षता डॉ. किरण सुकतवाड (मुख्या अधिकारी नगर परिषद, पुसद) विशिष्ट अतिथि डॉ. सिमलाई वानखेड़े (अधीक्षक, आयुर्वेद कॉलेज, पुसद), श्रीमान् राम महाराज

(भागवताचार्य दिग्रस), श्रीमान् सुरेन्द्र सिंह जी राठौड़ (अध्यक्ष, दिव्यांग सेवा समिति, पुसद), श्री राधेश्याम जी जांगीड़ (अध्यक्ष, आयुर्वेद कॉलेज, पुसद), श्रीमान् दयाराम जी चव्हाण (उपाध्यक्ष, दिव्यांग सेवा समिति, पुसद), श्रीमान् हरिप्रसाद जी विश्वकर्मा (उपाध्यक्ष, दिव्यांग सेवा समिति, पुसद), विनोद जी राठौड़ (सेवा प्रेरक, नांदेड़) रहे।

डॉ. वरुण जी श्रीमाल (ऑर्थोपेडिक सर्जन), रिहांस जी महता (पी.एन.डो.), किशन जी सुथार (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।



NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक 15 मई, 2022

■ कैथल, हरियाणा

■ गुरुद्वारा श्री जन्डसर साहिब बहादुरद्वार बरेटा, तह. बुडलाड़ा,
जिला मानसा, पंजाब

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में
जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना दें।



+91 7023509999
+91 2946622222

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org



पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक, दिव्यांग सेवा संस्थान



'सेवक' प्रशान्त मिया
संस्थापक, दिव्यांग सेवा संस्थान

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह

दिनांक : 15 मई, 2022

स्थान

अग्रवाल धर्मशाला, मोती चौक, यानसेर, कुतुबपुर, हरियाणा, सायं 4.00 बजे

श्री जैन कुशल भवन, बिरसी गेरेज के पास, पुराना बस स्टेण्ड रोड़, गोंदिया, सायं 4.30 बजे

होटल आर. के. ग्रेन्ड, सिगरा याने के सामने, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, प्रातः 10.00 बजे

इस स्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में
जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना दें।



+91 7023509999
+91 2946622222

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org



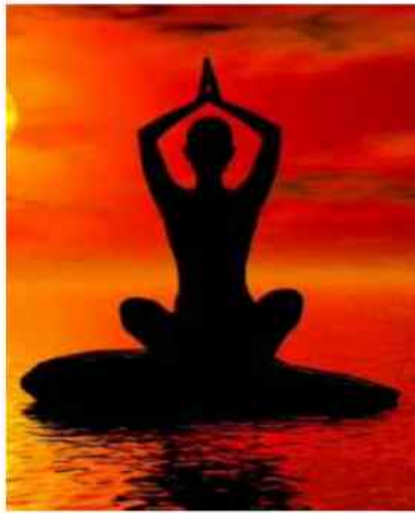
पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक, दिव्यांग सेवा संस्थान



'सेवक' प्रशान्त मिया
संस्थापक, दिव्यांग सेवा संस्थान

चिंता नहीं चिंतन कीजिए चिंता गायब हो जाएगी

चिंता, मानव मस्तिष्क का ऐसा विकार है जो पूरे मन को झकझोर कर रख देता है। भारतवर्ष में सम्राट समुद्रगुप्त प्रतापी सम्राट हुए थे। लेकिन चिंताओं से वे भी नहीं बच सके और चिंताओं के कारण परेशान से रहने लगे। चिंताओं का चिंतन करने के लिए एक दिन वन की ओर निकल पड़े। वह रथ पर थे, तभी उन्हें एक बांसुरी की आवाज सुनाई दी। वह मीठी आवाज सुनकर उन्होंने सारथी से रथ धीमा करने को कहा और बांसुरी के स्वर के पीछे जाने का इशारा किया। कुछ दूर जाने पर समुद्रगुप्त ने देखा कि झरने और उनके पास मौजूद वृक्षों की आड़ से एक व्यक्ति बांसुरी बजा रहा था। पास ही उसकी भेड़ें घास चर रही थीं।



राजा ने कहा, 'आप तो इस तरह प्रसन्न होकर बांसुरी बजा रहे हैं, जैसे कि आपको किसी देश का साम्राज्य मिल गया हो।' युवक बोला, 'श्रीमान आप दुआ करें। भगवान मुझे कोई साम्राज्य न दे। क्योंकि अभी ही सम्राट हूँ। लेकिन साम्राज्य मिलने पर कोई सम्राट नहीं होता। बल्कि सेवक बन जाता है।' युवक की बात सुनकर राजा हैरान रह गए। तब युवक ने कहा

सच्चा सुख स्वतंत्रता में है। व्यक्ति संपत्ति से स्वतंत्र नहीं होता बल्कि भगवान का चिंतन करने से स्वतंत्र होता है। तब उसे किसी भी तरह की चिंता नहीं होती है। भगवान सूर्य किरणें सम्राट को देते हैं मुझे भी, जो जल उन्हें देते हैं मुझे भी।

ऐसे में मुझमें और सम्राट में बस मात्र संपत्ति का ही फासला होता है। बाकी तो सब कुछ तो मेरे पास भी है। यह सुनकर युवक को राजा ने अपना परिचय दिया। युवक ये जान कर हैरान था। लेकिन राजा की चिंता का समाधान करने पर राजा ने उसे सम्मानित किया।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..
जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाना निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नम)	सहयोग राशि (तीन नम)	सहयोग राशि (पाँच नम)	सहयोग राशि (ग्यारह नम)
तिपहिया साइकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

तू सूरज हे पगले

फिर क्यों अंधकार से डरता है।

तू तो अपनी एक किरण से

जग प्रदीप्त कर सकता है।।

यही इन्हीं शब्दों में, इन्हीं भावों में जामवंत जी ने कहा होगा। और हनुमान जी ने कहा जब तक मैं लौटकर के आऊँ आप कन्द खाइये। कन्द किसको कहते हैं ? जो अपने पौधों के तने होते हैं जड़, मूल, कन्द जैसे एलोविरा ये तो ऊपर उगता है। ये प्रकृति ने कितने बड़े वरदान के रूप में दिया है देखो अन्दर रस ही रस भरा हुआ है। ये शरीर के लिए बहुत ही उपयोगी है। एलोविरा बोलते हैं इसको ये किडनी में 10 करोड़ से अधिक कोशिकाएँ हैं और लाखों ऊतक हैं। फिर ये किडनी का अंग बन गया। ये हमारे खून को छानती है। साइलेंट रूप से चुपचाप हमारी सेवा करके आ रही है। इसलिए सेवा करते हैं कि हम भी सेवा कर सकें

परहित बस जिनके मनमाही।

ताको जग दुर्लभ कछु नाही।।

आज ही सुबह स्वाध्याय कर रहा था प्रथम श्लोक का वर्णानाम और संघाणाम, रसानाम छन्द सामपि। मैं रस शब्द पर टीक गया। हमारे शरीर में देह-देवालय

में, हमारे मनोभाव में रस रहनी चाहिए। प्रसन्नता रहनी चाहिए। उत्साह रहना चाहिए, उल्लास रहनी चाहिए। उमंग रहनी चाहिए और।

भवानी शंकरो वन्दे,

श्रद्धा विश्वास रुपिणौम्।।

श्रद्धा रहनी चाहिए। और विश्वास रहना चाहिए।

श्रद्धावान लभयन्ते ज्ञानम्।

विश्वासम् फलदायकम्।।

हां अपन रामचरित मानस का स्वाध्याय इसलिए बहिन और भाईयों को करा रहे कि इनसे गुण सीख सकें। आज से हमारी चिंता मिट जावे।



पुण्य अर्जित करने का पावन पर्व अक्षय तृतीया पर पावन कथा से जुड़े एवं दीन-दुःखी, दिव्यांगजनों की करें सेवा और पुण्य पायें..

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

श्रीमद्भागवत कथा

कथा व्यास
पूज्य बृजनन्दन जी महाराज

स्थान : राधा गाविन्द मन्दिर, श्री बृजसेवा धाम, वृंदावन, मथुरा
दिनांक: 10, 12 से 16 मई 2022, समय सायं: 4 से 7 बजे तक तथा 11 मई 2022, दोपहर 1 से 4 बजे तक
कथा आयोजक : बृजसेवा धाम, श्रीधाम वृंदावन, स्थानीय सम्पर्क सूत्र:9303711115, 9669911115

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA www.narayanseva.org
☎+91 294 662 2222 | 📞+91 7023509999 info@narayanseva.org

647

वनवासी क्षेत्र में असहाय सहायता शिविर सेवा - स्मृति के क्षण

सम्पादकीय

आज व्यक्ति की सहनशक्ति क्यों खोती जा रही है? क्यों वह छोटी-छोटी बातों में इतना उग्र हो जाता है कि उसे आपा भी याद नहीं रहता? क्या कारण है इस उन्माद का? थोड़ा गहराई से देखें तो अनुभव आएगा कि व्यक्ति की दमित कुंठाएं ही इसकी जिम्मेदार हैं। पहले व्यक्ति की सहनशीलता कम से कम एक सीमा तक तो दिखाई देती थी, आज तो मामूली सी बात पर विस्फोट हो जाता है। ये कुंठाएं किस कारण से हैं? हो सकता है व्यक्तिशः इसके कारण अलग-अलग भी हों पर एक सामान्य कारण तो यह भी है कि विचारों की साझेदारी, एक दूसरे से दुःख-दर्द बाँटने की प्रकृति और किसी पर विश्वास कर लेने की स्थितियाँ बिगड़ती जा रही हैं। व्यक्ति वही करने का मानस बनाता है जो वह पढ़ता, देखता व सुनता है। उसे वही समझ में आता है। आज हमारे चारों ओर ऐसे नकारात्मक विचार, ध्वंसालम्बक क्रियाकलाप और दृश्य फैले पड़े हैं कि कोई कितना भी प्रयास करे तो भी काजल की कोठरी से कोरा निकलना कठिन है। जरूरत है वातावरण को सुधारने की। यह शुरुआत स्वयं से ही करनी होगी। हम ही संकल्प लें कि सकारात्मक अपनायेंगे व बिना तह में गए किसी बात से प्रभावित नहीं होंगे।

कुछ काव्यमय

कुदरत और परमात्मा, कितने भये उदार।
मानव झोली में भरा, दुनिया भर का प्यार।।
कुदरत से ही पुष्ट है, मानव तन भरपूर।
ये ही इसको पोषती, इससे ही है नूर।।
फिर भी हमें बिगाड़ते, इसका पावन रूप।
उसको उजड़ा कर रहे, करते उसे कुरूप।।
वनस्पति और खग बने, कुदरत के सिंगार।
करते हैं हम ज्यादाती, करते ध्वस्त निखार।।
कब चेतेंगे क्या पता, मेधा दो भगवान।
समझदार हम सिद्ध हों, नहीं रहें नादान।।

अपनों से अपनी बात

सत्संग और सद्कर्म में ही शान्ति

एक संत महात्मा के पास एक दिन उनका एक शिष्य पहुंचा। उसने कहा, 'महात्मन् ! मैं वर्षों से आपका सत्संग कर रहा हूँ। आपके असंख्य उपदेश मैंने सुने हैं। फिर भी मन अशांत रहता है। मैं शान्ति कैसे प्राप्त करूँ ? कोई उपाय बताएं।' महात्मा ने उससे पूछा, 'क्या तुम जीवन में आने वाले कष्टों का सामना करना जान चुके हो ? क्या मेरे उपदेशों पर अमल किया है ? शिष्य ने उत्तर दिया, 'ऐसा तो नहीं हो पाया है, गुरुदेव ! हालांकि सांसारिक साधनों व कार्यों से मैं अपने को दूर रखता हूँ। कभी आनन्द का जीवन जिया ही नहीं। संत बोले, 'जिसने मानव जीवन पाकर कर्म नहीं किया, परिवार व समाज के प्रति अपना कर्तव्य पालन नहीं किया, उसे इस जीवन में तो क्या, मृत्योपरान्त भी शान्ति नसीब नहीं हो सकती। बन्धुओं ! इस प्रसंग का सार ही यह है कि मनुष्य के सद्कर्म और उसका कर्तव्यपालन ही उसके मन को सन्तुष्टि प्रदान करता है। अतएव कर्म करते रहें, शान्ति स्वतः मिल जाएगी। मनुष्य के चलने का एक मात्र बेहतर मार्ग और धर्म है सद्कर्म करते रहना। सद्कर्म के प्रति समर्पण ही जीवन की शोभायात्रा है।



सद्कर्म ही ऐसा धर्म है, जिसमें सभी मार्ग एकाकार हो जाते हैं। सबका हित और कल्याण इसी राह पर चलने में है। अपने जीवन में हम सभी शान्ति और आनन्द पाना चाहते हैं, तो इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनेक मार्ग हो ही नहीं सकते। एक सीधे रास्ते को छोड़कर कुछ लोग आसानी के लिए उपमार्ग निकाल लेते हैं, लेकिन इसमें न तो दिशा बदलती है और न ही मूल गन्तव्य। सद्कर्म में डूबे रहना ही सही अर्थों में जिन्दगी से प्यार करते रहना है। यदि कष्टों से घबरा कर यह कहने लग जाएं कि जन्म ही एक बड़ी विपत्ति है, तो सच मानिये उस दिन हम जीते हुए भी मुर्दा बन जाएंगे। मानव को जीवन के हर पहलू का सकारात्मकता के साथ अनुभव करना चाहिए। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयास करना होगा।

धैर्य का पुरस्कार

हमें सदैव धैर्यशील बने रहना चाहिए, क्यों कि धैर्यशीलता ही मानव की सबसे बड़ी पूंजी है। सफलता भी धैर्यशील व्यक्ति के ही कदम चूमती है। मुश्किल की घड़ियों में भी धैर्य ही काम आता है। हमें धैर्य कभी नहीं खोना चाहिए।



एक बार गाँव में भयंकर अकाल पड़ा। उसी गाँव में एक दयालु सेठ भी था। उसके कोई संतान नहीं थी। उसने घोषणा करवाई कि वह बच्चों को प्रतिदिन रोटियाँ बाँटेगा। दूसरे दिन से ही उसके घर के आगे बच्चों की भीड़ लग गई। वे रोटी की टोकरी तक पहुँचने के लिए धक्का-मुक्की करने लगे।

रोटियाँ चूँकि बहुत तादाद में बनी थी। इसलिए टोकरी में रखी रोटियाँ छोटी-बड़ी थी। हर बच्चा चाहता था कि उसे बड़ी रोटी मिले। उन्हीं बच्चों में एक छोटी लड़की भी थी जो भीड़ से दूर खड़ी थी। जब सभी बच्चों ने रोटियाँ ले ली तो वह लड़की आगे बढ़ी। उस समय केवल एक रोटी बची थी। लड़की ने वह रोटी ली और वहाँ से चली गई।

दूसरे दिन भी यही क्रम जारी रहा। इस बार टोकरी में एक छोटी रोटी बची

निराशा तो कभी पास फटकने ही नहीं देनी चाहिए। पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों को पूर्ण मनोयोग से निर्वाह करते रहें। अपना कुछ समय, श्रम और ईमानदारी से अर्जित धन दीन-दुखियों की सहायता में अवश्य लगाएं। इससे असीम शान्ति और आनन्द का अनुभव होगा। यही सच्चा मानव धर्म है और जीवन की डगर भी। साहचर्य, दया, परोपकार, त्याग, विनम्रता, सहिष्णुता आदि गुण ही तो हैं, जो एक बेहतर इन्सान की रचना करते हैं, और ऐसे ही मानव दुनिया से जाने के बाद भी अपने सद्कर्म की छाप छोड़ जाते हैं।

जब कोई 'मन-वचन-कर्म' से एक रूप हो जाता है, तो वह देवत्व की ओर बढ़ने लगता है। वह मात्र स्वयं के कल्याण की नहीं, वरन मानव मात्र के कल्याण की बात करने लगता है यदि वाणी शुद्ध है, तो यह परम आवश्यक है कि मन और कर्म भी शुद्ध हो। जब हम, 'मनसा-वाचा-कर्मणा' एक रूप होंगे तो हमारी आत्मा भी सर्वभूतहित के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगेगी। यह जगत् तपोभूमि भी है और कर्मभूमि भी। इस कर्मभूमि में हम अपना कर्म करें, लेकिन सत्य से विमुख कभी न हों। दूसरों की भलाई के लिए किए गए किसी भी कार्य का पुण्य स्वभावतः अधिक होता है।

— कैलाश 'मानव'

थी। लड़की ने बड़े से संतोष से वह रोटी ली और अपने घर आ गई। जब उसने रोटी तोड़ी तो उसमें उसे एक सोने का सिक्का मिला। माँ ने उसे वह सिक्का वापस करके आने को कहा। लड़की ने जब सिक्का सेठ को वापस किया तो सेठ बोला, 'मैंने यह सिक्का जानबूझकर रोटी में रखवाया था। यह मुझे उस बच्चे को पुरस्कार में देना था जो सबसे ज्यादा धैर्यवान हो। तुम इसकी हकदार हो इसलिए इस सिक्के को रख लो।' लड़की बोली, 'सेठजी, मेरा पुरस्कार मुझे मिल चुका है, क्योंकि मुझे रोटी पाने के लिए धक्का मुक्की नहीं करनी पड़ी। इसलिए, यह सिक्का आप ही रखिए।' लड़की ने वह सिक्का सेठ को लौटा दिया। सेठ ने लड़की के पिता से कहा, मेरे कोई संतान नहीं है इसलिए आपकी पुत्री को मैं गोद लेना चाहता हूँ। उसके बाद, उस लड़की को सेठ ने गोद ले लिया और उसके परिवार की जिम्मेदारी उस दयालु सेठ ने ही निभाई। — सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

इस तरह के अनुभव कैलाश के लिये नई बात नहीं थी। आये दिन कोई न कोई प्रसंग उपस्थित होता था जिससे जीवन को समझने की एक नई दृष्टि उत्पन्न होती थी। एक बार वह उदयपुर के बड़े अस्पताल के आर्थोपेडिक वार्ड में रोगियों से मिल रहा था तब उसकी भेंट एक विचित्र व्यक्ति से हुई। जीवन जीने का अन्दाज ऐसा भी हो सकता है यह सोच सोच कर वह मुदित हो गया। इस रोगी के हाथ में प्लास्टर बंधा था, हर कोई इसके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ और पट्टा खुलने की कामना करता। कैलाश ने भी ऐसा ही कहा तो वह बोल उठा—मुझे पट्टा कटवाने की जल्दी नहीं है, मैं तो तारीख से 15 दिन बाद पट्टा खुलवाना चाहता हूँ, मैं तो ज्यादा से ज्यादा दिन अस्पताल में रहना चाहता हूँ।

कैलाश अचरज में पड़ गया, हर कोई जल्द से जल्द अस्पताल से छुट्टी करवा कर घर जाना चाहता है मगर यह है कि ज्यादा से ज्यादा दिन अस्पताल में रहना चाहता है। कैलाश को यह रोगी दिलचस्प लगा। वह पूछ बैठा—ऐसा क्यों? रोगी ने बताया कि उसकी दुकान है जिस पर ग्राहकों की भारी भीड़ उमड़ती है, लोगों को लाइन बनाकर खड़े रहना पड़ता है। एक पल की फुरसत नहीं मिलती, दिन कैसे गुजर जाता है पता ही नहीं चलता। हर दिन यही बात। यहां भर्ती हुआ हूँ तो लोगों से मिलना-जुलना तो हो रहा है, आप जैसे लोगों से बातचीत तो हो रही है, कुछ अच्छा सोचने का समय तो मिल रहा है। उसकी बातें सुन कैलाश के चेहरे पर एक मुसकान खिल गई।

अंश - 091



NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

पुण्य अर्जित करने का पावन पर्व
अक्षय तृतीया पर पावन कथा से जुड़े एवं
दीन-दुःखों, दिव्यांगजनों की करें सेवा और पुण्य पायें...



श्रीमद्भागवत
कथा

संस्कार

चैनल पर सीधा प्रसारण

कथा व्यास
पुण्य रमाकान्त जी महाराज

स्थान : माँ बहरारा माता मन्दिर, तह-कैलारस, मुरैना (म.प्र.)
दिनांक: 14 से 20 मई, 2022, समय: दोपहर: 1.00 से 4.00 बजे तक

कथा आयोजक : श्री विशंभर दयाल धाकड़, कोडा, कैलारस, स्थानीय सम्पर्क मुंब: 7898495323, 7747005377

मुट्ठीभर भीगे चने दूर करेंगे यूरीन प्रॉब्लम, कई और फायदे

काले चने बादाम जैसे महंगे ड्राइफ्रूट्स से भी ज्यादा फायदेमंद होते हैं। इसमें प्रोटीन, फाइबर, मिनरल, विटामिन और आयरन भरपूर मात्रा में होता है जो प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने में मददगार है। सुबह खाली पेट भीगे हुए चने खाने से कई तरह की हैल्थ प्रॉब्लमस से छुटकारा पाना आसान हो जाता है। जानें किस तरीके से खाएं भीगे हुए चने।



चने खाने का सही तरीका- मुट्ठी भर चने तो मिट्टी या चीनी के बर्तन में डालकर भिगोएं। रात भर इन्हें इसी तरह रखें और सुबह खाली इन्हें पानी से निकाल कर चबा-चबा कर खाएं।

कब्ज से राहत - भीगे हुए चने में ढेर सारे फाइबरस होते हैं जो पाचन क्रिया दुरस्त करके पेट साफ करने में मददगार है। इसे खाने से कब्ज जैसी परेशानी आसानी से दूर हो जाती है।

भरपूर एनर्जी - यह एनर्जी का बहुत अच्छा स्रोत है। रोजाना इसका सेवन करने से शारीरिक कमजोरी दूर होने लगती है।

यूरिन प्रॉब्लम दूर - बार यूरिन जाने की परेशानी होती है तो भीगे चने के साथ गुड़ का सेवन करने से फायदा मिलता है।

किडनी की बीमारियां दूर - जिन लोगों को किडनी से जुड़ी परेशानियां हैं उनके लिए चने का सेवन बहुत फायदेमंद है। चने किडनी से एक्स्ट्रा साल्ट निकालने में मददगार हैं। जिससे किडनी स्वस्थ रहती है।

सर्दी-जुकाम से बचाव - इसे खाने से प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है जिससे सर्दी-जुकाम जैसी छोटी-मोटी परेशानियों से बचाव रहती है।

स्वस्थ दिल- कोलस्ट्रॉल लेवल को कंट्रॉल करने में भी भीगे चने बहुत लाभकारी हैं। इसका सेवन करने से दिल की बीमारियों का खतरा कम हो जाता है।

डायबीटिज कंट्रोल - रोजाना भीगे चने खाने से मोटाबॉलिज्म स्ट्रॉंग होना शुरू हो जाता है। जिससे डायबीटिज कंट्रोल रहती है।

एनिमिया से राहत - आयरन की कमी दूर करने के लिए काले चने बेस्ट हैं। इससे ब्लड नेचुरल तरीके से साफ भी होने लगता है।

वजन बढ़ाए - बॉडी मास में सुधार लाना चाहते हैं तो भीगे चने का सेवन बेस्ट है। इसे रोजाना खाने से मसल्स स्ट्रॉंग होने लगती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

मैंने कहा-कभी आप उदयपुर आईये। आप संस्था का अवलोकन कीजिए, बोले-परसों आता हूँ, मैं बड़ा खुश हुआ। बाँसवाड़ा से तीन दिन की छुट्टी ली, मन में सोचा वैसे तो उनके पास अपनी कार है। अपने पास एक जीप थी, जीप में कैसे आर्येंगे? घाणेराम से यहाँ आने में उस समय सड़कें अच्छी नहीं थी। मैंने एक साधक को किराये की कार से भेजा, कार वापस खाली आ गयी। साधक से पूछा तो बोले-उनका बम्बई से फोन आ गया, अर्जेन्ट जाना था, वो जोधपुर गये, वहाँ उनकी बेटी रहती है।

वहाँ से जोधपुर हवाई जहाज से बम्बई चले गये। मैंने मन में सोचा बातें हैं, बातों का क्या? बातें बहुत की, छुट्टियाँ ली, कितना इंतजार किया? जैसी हरि इच्छा, उन्हीं चैनराज जी ने पन्द्रह दिन बाद फोन किया। कैलाश जी मैं चैनराज लोढ़ा बोल रहा हूँ, अगर आप उदयपुर हैं



तो मैं कल आना चाहता हूँ, मैंने कहा-बाबू जी आप जरूर आईये, मैं आपको हवाई अड्डा लेने आऊँगा। पुनः छुट्टी ली। बाबू जी को लेकर आया। बाबूजी बड़े गद्गद्, छोटे छोटे बच्चों को देखा, उनकी आँखों में पानी भर आया।

बोले- मैं ऐसे ही बच्चों की सेवा करना चाहता हूँ। आपके साथ वनवासी क्षेत्रों में गोगुन्दा, जसवन्तगढ, सूरण सब जगह चलना चाहता हूँ। शक्तिपीठ में रात के दो बजे गये, दो बजे सोये, हे! ठाकुर! तुमने चैनराज जी लोढ़ा साहब से मिलवा दिया। जिन चैनराज जी ने इतिहास रचा, सेवा ईश्वरीय उपहार- 444 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

<p>भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन 2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प</p>	<p>960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार 2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।</p>	<p>1200 नई शाखाएं 2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।</p>
<p>120 कथाएं 2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।</p>	<p>वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी 2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।</p>	<p>नारायण सेवा केन्द्र आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।</p>

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

<p>26 देशों में पंजीयन वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य</p>	<p>6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ 6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार</p>	<p>20 हजार दिव्यांगों को लाभ विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास</p>
--	---	--

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।
संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।